प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 13 (2019–20)

हिन्दी–ब (कोड–85)

कक्षा–9

निर्धारित समय– 3 घंटे अधिकतम अंक– 80

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 15

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 9

हमारी सामाजिक विचारधारा में एक बड़ा भारी दोष है। हम शरीर से श्रम करना नहीं चाहते वरन् उसे हीन दृष्टि से देखते हैं और जिनको शरीर श्रम करना पड़ता है, उन्हें समाज में हीन दर्जे का मानते हैं। अमीर या गरीब, कोई भी श्रम करना नहीं चाहता। धनिक अपने पैसे के बल से नौकरों द्वारा अपना काम चला लेता है। गरीब भूख की लाचारी से श्रम करता है। हमें यह वृत्ति बदलनी चाहिए। शरीर श्रम की केवल प्रतिष्ठा स्थापित कर संतोष नहीं मानना है। उसके लिए हमारे दिल में प्रीति होनी चाहिए। आज श्रमिक भी कर्त्तव्यपरायण नहीं रहा है। श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाना उसी के हाथ है। जिस श्रम में समाज को जिंदा रखने की क्षमता है, उस श्रम का सही मूल्य अगर श्रमिक जान लेगा तो देश में आर्थिक क्रांति होने में देर नहीं लगेगी।

गाँधी जी ने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए ही रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया। उनकी मान्यता के अनुसार हरेक को नित्य उत्पादक श्रम करना ही चाहिए। यह उन्होंने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा कायम करने के लिए किया।

1. हमारे समाज की विचारधारा में क्या परिवर्तन उपेक्षित है? 2

उत्तर : हमारे समाज में कोई भी श्रम नहीं करना चाहता अपितु उसे हीन दृष्टि से देखते हैं और जो श्रम करते भी हैं उन्हें निम्न दर्जे का मानते हैं। अमीर हो या गरीब कोई भी अपनी इच्छा से श्रम नहीं करना चाहता। इसी सामाजिक विचारधारा के दोष में परिवर्तन होना चाहिए।

2. देश में आर्थिक क्रांति कैसे लाई जा सकती है? 2

उत्तर : श्रम में समाज को जिंदा रखने की क्षमता है और अगर उसी श्रम का सही मूल्य श्रमिक जान ले तो देश में आर्थिक क्रांति आने में कदाचित डर नहीं।

3. गाँधी जी ने श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए क्या किया? 2

उत्तर : उन्होंने रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का संवाहन बनाया। उनकी मान्यता के अनुसार हरेक को नित्य उत्पादक श्रम करना ही चाहिए।

4. उपरोक्त गद्यांश में से प्रत्यय के उदाहरण छाँटकर लिखिए? 2

उत्तर : **सामाजिक–** इक (प्रत्यय)
लाचारी– ई (प्रत्यय)
मान्यता– ता (प्रत्यय)

5. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर : श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 6

मन समर्पित तन समर्पित, और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन।
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित, रक्त का कण–कण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
कर रहा आराधना मैं आज तेरी,
एक विनती तो करो स्वीकार मेरी।
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी।
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,

आयु का क्षण–क्षण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती,
तुझे कुछ और भी दूँ।

1. उपरोक्त पंक्तियों में कवि के भाव अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए? 2

उत्तर : कवि देश भक्ति से ओत–प्रोत है। वह अपने देश के लिए अपने आपको न्योछावर करने के लिए तत्पर है। वह कहता है मेरा तन, मन और सम्पूर्ण जीवन देश को समर्पित है।

2. थाल में लाऊँ सजा कर भाल जब भी, कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण, से कवि का क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर : कवि कहना चाहते हैं कि जब कभी भी आवश्यकता होगी तो मैं देश पर अपने प्राण भी न्योछावर कर दूँगा। जब भी मैं अपने मस्तक को आपको भेंट चड़ाऊँ तो आप उसे स्वीकार कर लेना।

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए। 2
आशीष, भाल, धरती, निवेदन

उत्तर : आशीष–आशीर्वाद, भाल–मस्तक, धरती–धरा, निवेदन–विनती।

अथवा

जन्म दिया माता–सा जिसने, किया सदा लालन–पालन
जिसके मिट्टी–जल से ही रचा गया हम सबका तन।
गिरिवर नित रक्षा करते हैं, उच्च उठा के शृंग महान
जिसके लता द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान।
माता केवल बाल–काल में निज अंक में धरती है,
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन–पोषण करती है।
मातृभूमि करती है सबका लालन सदा मृत्यु पर्यन्त,
जिसके दया–प्रवाहों का होता न कभी सपने में अंत।
मर जाने पर कण देहों के इसमें ही मिल जाते हैं,
हिन्दू जलते, यवन–ईसाई शरण इसी में पाते हैं।
ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्गलोक से भी प्यारी,
उसके चरण–कमल पर मेरा तन–मन–धन सब बलिहारी।

1. गिरिवर, लता आदि का हमारे जीवन में क्या योगदान है?

उत्तर : गिरिवर अर्थात् ऊँचे–ऊँचे पहाड़ हम सबकी रक्षा करते हैं। लताएँ हमें अपनी छाया प्रदान करती हैं।

2. मातृभूमि का हमारे पालन में अधिक महत्त्व क्यों है?

उत्तर : माता बालक का तब तक लालन–पालन करती है, जब तक वह शक्तिशाली न हो जाए, परन्तु धरती माता जन्म–से लेकर मृत्यु तक हर कदम पर उसका पालन–पोषण तथा विकास करती है।

3. भाव स्पष्ट कीजिए।
'जिसके मिट्टी–जल से ही है।
रचा गया हम, सबका तन।'

उत्तर : यह मातृभूमि की मिट्टी और जल ही है जिससे हम मानवों का शरीर और जीवन बने–ढले हैं। यहीं का जल, दूध, फल–सब्जी तथा खनिज आदि सेवन करने से हमारे शरीर निर्मित हुए हैं।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 15

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए। 2
प्रतिज्ञा, फैसला, नेतृत्व।

उत्तर : **प्रतिज्ञा–** प + र + अ + त + इ + ज + ञ + आ
फैसला– फ + ऐ + स + अ + ल + आ,
नेतृत्व– न + ए + त + ऋ + त + व + अ

4.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक का प्रयोग कीजिए। 1
आख, ऊचाई, झाककर

उत्तर : **आख–** आँख
ऊचाई– ऊँचाई
झाककर– झाँककर

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग कीजिए। 1
प्रपच, आदोलन, कपनी

उत्तर : **प्रपच–** प्रपंच
आदोलन– आंदोलन
कपनी– कंपनी

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित स्थान पर नुक्ता का प्रयोग कीजिए। 1
किस्मत, खानसामा, हजार।

उत्तर : **किस्मत–** क़िस्मत
खानसामा– ख़ानसामा
हजार– हज़ार

6.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानकर लिखिए। 1
वास्तविक, औपचारिक, गुंडागर्दी।

उत्तर :

	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	वास्तव	इक
2.	उपचार	इक
3.	गुंडा	गर्दी

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानकर लिखिए। 1

प्रबल, निरादर, लाजवाब।

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द
1.	प्र	बल
2.	निर	आदर
3.	ला	जवाब

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में मूल शब्द के साथ जुड़े उपसर्ग और प्रत्यय को अलग कर लिखिए। 1

अनुदारता, बेचैनी, अभिमानी

उत्तर :

	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
1.	अनु	दार	ता
2.	बे	चेन	ई
3.	अभि	मान	ई

7.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार शब्दों में सही संधि–विच्छेद कीजिए। 4

परीक्षा, हिमांशु, संचय, दयानंद, दीक्षांत।

उत्तर : परीक्षा– परि + ईक्षा
हिमांशु– हिम + अंशु
संचय– सम् + चय
दयानंद– दया + आनन्द
दीक्षांत– दीक्षा + अंत

2. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन वाक्यों में उचित विराम–चिह्न का प्रयोग कीजिए। 3

1. हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सभी एक ईश्वर की संतान हैं
2. जीवन में लाभ हानि सुख दुख तो चलता ही रहता है
3. तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है
4. अरे तुमने तो कमाल ही कर दिया

उत्तर :

1. हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी एक ईश्वर की संतान हैं।
2. जीवन में लाभ–हानि, सुख–दुख तो लगा ही रहता है।
3. तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है?
4. अरे! तुमने तो कमाल ही कर दिया।

खण्ड–ग

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 25

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 5

1. क्या भगवाना को असमय मृत्यु से बचाया जा सकता था? 2

उत्तर : सांप के डंसने के बाद भगवाना की माँ उसे झाड़–फूंक करवाने ओझा के पास ले गई जबकि उसे किसी चिकित्सक के पास ले जाना चाहिए था वहीं उसे सही उपचार मिलता और शायद वो असमय मृत्यु से भी बच जाता।

2. लेखिका को सांस लेने में कठिनाई कब और क्यूं हो रही थी? 2

उत्तर : जब ल्होत्से ग्लेशियर से टूट कर एक लंबे बर्फ़ के पिंड ने विशाल हिम पुंज का रूप ले लिया और रेलगाड़ी जैसी तेज गति के साथ ढलान से नीचे आकर कैंप को तहस–नहस कर दिया और वह लेखिका के सिर के पिछले हिस्से में इस प्रकार टकराया कि लेखिका को लगा जैसे कोई चीज उनके शरीर को कुचलती हुई चल रही है और उस समय उन्हें सांस लेने में भी कठिनाई हो रही थी।

3. अतिथि के ये कहने कि वह धोबी को कपड़े देना चाहता है तो लेखक ने क्या अनुमान लगाया। 1

उत्तर : लेखक ने अनुमान लगाया कि कपड़े धुल जाएंगे तो शायद ये भी जल्दी चले जाएंगे पर ऐसा हुआ नहीं और लेखक को फिर निराशा हाथ लगी।

9. गोधूलि बेला से क्या तात्पर्य है? लेखक ने क्या–क्या उदाहरण देकर धूल का व्याख्यान किया है? 5

उत्तर : पुराने समय में सूर्यास्त के समय जब गाय आदि पशु चरकर वापस अपने बसेरे लौटने लगते हैं तो उनके पैरों से उड़ी धूल से सूरज की लालिमा को ढक रही होती है उसी बेला को गोधूलि बेला कहा जाता है।

"लेखक के अनुसार" : अमराईयों के पीछे छिपे हुए सूर्य की किरणों में जो धूलि सोने को मिट्टी कर देती है। सूर्यास्त के उपरांत लीक पर गाड़ी के निकल जाने के बाद जो रूई के बादल की तरह या एरावत हाथी के नक्षत्र पथ की भाँति जहाँ की तहाँ स्थिर रह जाती है, चाँदनी रात में मेले जाने वाली गाड़ियों के पीछे जो कवि कल्पना की भाँति उड़ती चलती है, जो शिशु के मुँह की पंखुड़ियों पर साकार सौंदर्य बनकर छा जाती है– उसे ही धूल कहते हैं।

अथवा

'धर्म की आड़' पाठ के लेखक कौन हैं और उन्होंने इस पाठ के द्वारा समाज को क्या महत्त्वपूर्ण संदेश देने की कोशिश की है?

उत्तर : 'धर्म की आड' पाठ के लेखक गणेश शंकर विद्यार्थी हैं। इस पाठ में उन्होंने उन लोगों के इरादों और कुटिल चालों को बेनकाब करने की कोशिश की है, जो धर्म की आड़ लेकर सामान्य हैं को आपस में लड़ाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि धर्म की आड़ में अपना फायदा देखने वाले हमारे ही देश में हों। दूर देशों में भी अनेक वर्ग धर्म के नाम पर हुई अनितियों, कुकर्मों के शिकार हुए हैं। लेखक के अनुसार धर्म अजां देने, शंख बजाने या नमाज़ पढ़ने का नाम नहीं है। धर्म का सही अर्थ शुद्धाचरण और सदाचार है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 5

1. रहीम के दोहे किस प्रकार के होते हैं? उनके दोहों से क्या शिक्षा मिलती है? 2

उत्तर : रहीम जी के दोहे नितिपरक दोहे हैं। इन दोहों से हमें यह शिक्षा तो मिलती है कि सबके साथ किस प्रकार का बर्ताव करना चाहिए। साथ–साथ मनुष्य को करणीय और अकरणीय आचरण की भी नसीहत देते हैं।

2.

"अशराफ़ और कमीने से ले शाह ता वज़ीर
ये आदमी ही करते हैं सब कारे दिलपज़ीर
यां आदमी मुरीद है और आदमी ही पीर
अच्छा भी आदमी ही कहाता है ए नज़ीर
और सबमें जो बुरा है सो है वो भी आदमी" .....

'आदमीनामा' कविता की इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : इन पंक्तियों के माध्यम से भी कवि भिन्न–भिन्न प्रकार के आदमियों का ही वर्णन कर रहा है। कवि यह कहना चाहता है कि शरीफों से लेकर नीच आदमी ही हैं। शाह यानी राजा हो या वज़ीर सब आदमी ही तो हैं। कई आदमी ही ऐसे कार्य करते हैं जो दिल को पसंद आ जाता है। आदमी ही धर्म गुरू भी है और उसका प्रचार करने वाला शिष्य भी आदमी ही है। कई बार आदमी इतना अच्छा होता है कि उसकी मिसालें दी जाती है और इस दुनिया में कई आदमी बुरे भी हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए। 1

छन्नी–ककना, पास–पड़ोस, फफक–फफ़ककर

उत्तर : छन्नी–ककना– किसी अपने कि मदद के लिए तो चाहे हाथों के छन्नी–ककना ही बिक जाए हमें पीछे नहीं हटना चाहिए।

पास–पड़ोस– गाँवों में पास–पड़ोस के लोगों में प्रेम की भावना ज़्यादा होती है।

फफक–फफ़ककर– जब मेरी पड़ोस में रहने वाली आंटी का बेटा जंग में शहीद हो गया तो वो यह खबर सुनते ही फफक–फफककर रो पड़ी।

11. कवि रैदास की स्वामी भक्ति अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। 5

उत्तर : कवि रैदास का प्रभु के साथ घनिष्ठ संबंध है। उन्होंने अपने प्रभु की भक्ति दास भाव से की है। वे कहते हैं कि 'प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा' अर्थात् आप मालिक हैं और हम आपके दास। उन्होंने अपने आपको पूरी तरह अपने स्वामी को समर्पित कर दिया है। कवि बस अपने स्वामी के सानिध्य में रहना चाहते हैं। उन्होंने अपने प्रभु को चंदन, बादल, दीपक, मोती जैसे महान् विभक्तियों से सुसज्जित किया है तथा उनके सामने स्वयं को तुच्छ माना है अपनी तुलना दीपक की बाती, मोती का धागा, पानी, मोर इत्यादि से की है। इसमें उन्होंने अपने प्रभु के प्रति असीम प्रेम की भावना और समर्पण का भाव बहुत ही खूबसूरत तुलनात्मक शब्दों से दर्शाया है।

अथवा

"भीतर जो डर रहा छिपाए
हाय! वहीं बाहर आया।
एक दिवस सुखिया के तनु को
ताप–त़प्त मैंने पाया।
ज्वर में विह्वल हो बोली वह,
क्या जानूँ किस डर से डर,
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर" ..... पंक्तियों में व्याप्त डर और चाह को अपने शब्दो में विस्तारपूर्वक लिखिए।

उत्तर : इन पंक्तियों में सुखिया के पिता अपनी पुत्री को लेकर अत्यन्त चिंतित है। उन्हें हर पल यह डर सताता है कि सुखिया बाहर खेलने गई है और कहीं उनकी बिटिया किसी महामारी का शिकार ना हो जाए। किन्तु जिस बात का उन्हें डर था आखिर वहीं हुआ। एक दिन उन्होंने देखा कि सुखिया का शरीर तेज़ ज्वर में तप रहा था। सुखिया अपने पिता से दुखी हो बोली मुझे देवी के प्रसाद का एक फूल ही लाकर दे दीजिए। सुखिया के पिता विक्षिप्त हैं कि ये ज्वर से दुखी होकर इस प्रकार की चाह रख रही है या कोई और ही डर से अंदर ही अंदर भयभीत है।

पहले सुखिया के पिता को डर था कि कहीं सुखिया को कोई बीमारी ना लग जाए। फिर सुखिया को महामारी के परिणाम का डर था जिसे सोचकर ही सुखिया ने माता के प्रसाद के फूल की चाह रखी अपने पिता के सामने।

12. लेखिका का गिल्लू के प्रति प्रेम अन्य पशु पक्षियों से ज्यादा था। ऐसा किस कथन से ज्ञात होता है ? 3

उत्तर : जब गिल्लू छोटा था तब जैसे ही लेखिका खाना खाने बैठती, वह खिड़की से निकलकर आंगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज़ पर पहुँच जाता और फिर थाली में बैठ जाना चाहता। लेखिका ने बड़ी कठिनाई से थाली के पास बैठना सिखलाया जहाँ बैठकर वह लेखिका की थाली से एक–एक कर चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता था। लेखिका कहती हैं कि वह सब पशु पक्षियों से बहुत लगाव रखती हैं परन्तु किसी की भी इतनी हिम्मत नहीं थी कि वे लेखिका की थाली से खाना खाए। गिल्लू इनमें अपवाद था।

अथवा

गांधी जी को मही नदी पार कराने की जिम्मेदारी किसको सौंपी गई और उन्होंने उसे किस तरह निभाया ?

उत्तर : गाँधी जी को नदी पार करने की जिम्मेदारी बादलपुर के रघुनाथ काका को सौंपी गई थी। जिन्हें सत्याग्रही निषादराज कहते थे क्योंकि उनके पास बादलपुर में काफी जमीनें थी और नावें भी चलती थी। रघुनाथ काका ने इसके लिए एक नयी नाव खरीदी और उसे लेकर कनकपुरा पहुँच गए। जब समुद्र का पानी चढ़ना शुरू हुआ तब तक अंधेरा इतना घना हो गया था कि छोटे–मोटे दिये उसे भेद नहीं पा रहे थे।

तत्पश्चात् पूरा गाँव व आस–पास के लोग दिए लेकर आ गए। महात्मा गाँधी की जय, जैसे नारों से तट गूंजायमान था तभी गाँधी जी नाव में बैठे, नाव चल पड़ी जिसे रघुनाथ काका चला रहे थे। मही सागर के दूसरे तट पर भी वही माहौल था।

13. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए। 2

चक्षुःश्रवा, मज्जा, किलोले, आशंका, भुंजाने, प्रतिध्वनि।

उत्तर : आँखों से सुनने वाला, हड्डी के भीतर भरा मुलायम पदार्थ, क्रीड़ा, डर, भूनवाने, गूंज।

खण्ड–घ (लेखन) 25

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80–100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। 5

1. **योग और स्वास्थ्य।**
   • योग के प्रति जागरुकता • योग की उपयोगिता • स्वास्थ्य और योग का संबंध।
2. **सूचना–क्रांति।**
   • आशय • विशेषताएँ • चुनौतियाँ।
3. **वन्य जीव संरक्षण।**
   • उद्देश्य • महत्त्व • अधिनियम व योजनाएँ।

उत्तर :

1. योग और स्वास्थ्य

किसी ने सही कहा है, पहला सुख निरोगी काया है और निरोगी काया पाने के लिए योग अपनाना अनिवार्य है। योग स्वास्थ्य अनुशासन और आत्म जागरूकता पर केन्द्रित है। योग व्यायाम का प्रभावशाली प्रकार है, इसके माध्यम से न केवल शरीर तंदुरूस्त रहता है साथ–साथ मस्तिष्क, मन ओर आत्मा भी संतुलित रहते हैं। स्वस्थ जीवन शैली की कामना हेतु योग के महत्त्व को जानकर अपनाना ही श्रेयस्कर रहेगा। योग की ओर जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 21 जून को विश्व योगा दिवस मनाया जाता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि आज के युग में हम सभी विलासिता के गुलाम बन गए हैं और आरामदायक जीवन शैली अपना रहे हैं जिसके फलस्वरूप तनाव, चिंता व अनेक बीमारियों ने हमारे तन में घर कर लिया है। यह प्रणाणित हो चुका है कि नियमित अभ्यास से बहुत सी भयावह बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। योग अपनाने से शरीर की कोशिकाओं को भरपूर ऑक्सीजन मिलता है तथा रक्त का संचालन सुचारू रूप से होता है। प्रातः काल नियमित योग और पोष्टिक भोजन हमें अनगिनत शारीरिक व मानसिक व्याधियों से सुरक्षा प्रदान करता है। शरीर हष्ट–पुष्ट, मन प्रफुल्लित, शांत तथा दिमाग तेज होता है। शनैः शनैः योग बौद्धिक क्षमता तथा एकाग्रता के स्तर में सुधार लाता है और कार्य क्षमता बढ़ती है। शरीर को चुस्त–दुरूस्त, फुर्तीला, लचीला, पाचनतंत्र में सुधार तथा माँसपेशियों को मजबूती देता है। इसके अनगिनत लाभों के चलते योग की लोकप्रियता आज विश्वस्तर पर भी है। लाखों लोग योग के अनुयायी हैं।

2. सूचना–क्रांति

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना–क्रांति का संबंध आँकड़ों की प्राप्ति सूचना–संग्रह, सुरक्षा, परिवर्तन, आदान–प्रदान आदि से संबंधित है कि किस तरह एक 'क्लिक' से विश्व के किसी भी कोने से संपर्क स्थापित किया जा सकता है। गत वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी सेवा तथा बीपीओ क्षेत्र में भारत की वैश्विक भागीदारी बहुत बढ़ गई है। कम्प्यूटर के क्षेत्र में हुए अविश्वसनीय विकास से वह आज वाणिज्य और व्यापार का अभिन्न अंग बन गया है। ई–मेल, ई. बैंकिंग, ई. प्रशासन, ई. एजुकेशन, ई. शॉपिंग, ई. टिकटिंग जैसे ऑनलाइन पोर्टल्स की सहायता से कार्यकुशलता में वृद्धि हुई है। कम्प्यूटर और इंटरनेट के विकास से सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र सर्वाधिक रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्र बन गया है। पिछड़े देशों के सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए सूचना

प्रौद्योगिकी एक सम्यक तकनीक है किन्तु साइबर सुरक्षा की चुनौती प्रबल होती जा रही है। आँकड़ों की चोरी व उनका दुरूपयोग से देश की सुरक्षा खतरे में हैं।

3. वन्य जीव संरक्षण

यह जीवन प्रकृति की देन है। वन्यजीव और वनस्पति इस प्रकृति का अभिन्न अंग है। औद्योगिकरण, जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण तथा कुछ स्वार्थ हितों के परिणामस्वरूप वनस्पतियों व वन्य जीवों की प्रजातियां विलुप्त होती जा रही हैं, जिससे पर्यावरण पर भी विपरीत प्रभाव देखने को मिलता है। अपना अस्तित्व खोती प्रजातियों को संरक्षण प्रदान करने के मूल कारण हैं। प्राकृतिक संतुलन, आहार श्रृंखला व जैव–विविधता इत्यादि को बनाये रखना। भारत सरकार द्वारा वन्य जीव संरक्षण के लिए अनगिनत कदम उठाए गए हैं, जैसे वन्य जीवसंरक्षण अधिनियम पारित किया जाना भारतीय वन्य जीव बोर्ड का गठन आदि। प्रोजेक्ट टाइगर व प्रोजेक्ट एलीफेंट जैसे कई प्रोजेक्ट्स की मदद से भी जागरूकता जगाई गई।

15. अपने मित्र को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मुंबई में चयन की बधाई देते हुए पत्र लिखिए। 5

उत्तर :

32/3, रोहिणी
नई दिल्ली।
दिनांक– 20 नवम्बर, 2019
प्रिय मित्र राम,

आज अखबार में तुम्हारा नाम, छायाचित्र व तुम्हारी सफलता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। ए. आई. आर. रैंक देखी तो पता चला तुमने तो पूरे भारत में अपना नाम रोशन कर दिया। मित्र तुम्हारी इस शानदार सफलता ने तो तुम्हारे माता–पिता, विद्यालय और शहर को ही गौरवान्वित कर दिया। विद्यालय के सभी शिक्षकों को तुमसे यही आशा थी और अपनी मेहनत और लगन से तुमने ये कर दिखाया। मित्र आई. आई. टी., मुंबई में चयन होने के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं जानता हूँ आई. आई. टी. में दाखिला मिलना आसान नहीं, ये सचमुच काबिले तारीफ है।

मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि इसी प्रकार अपनी लगन और परिश्रम के बल पर नित नए, आयाम छूते रहो। घर पर सभी को मेरा सादर प्रणाम,

तुम्हारा मित्र,
नीरज

अथवा

ट्रेन में खोए सामान को किसी अपरिचित द्वारा पुनः पाने पर कृतज्ञता भरा पत्र लिखिए।

उत्तर :

12 सी, एल.बी.एस. मार्ग,
मुंबई।
दिनांक– 7 दिसम्बर, 2019
आदरणीय,
सादर नमस्कार,

हम एक दूसरे से परिचित नहीं हैं पर मानवता का एक रिश्ता हमारे बीच अवश्य है, शायद उसी नाते आपने मेरी पीड़ा का अनुभव किया और इतना कष्ट उठाया। ईश्वर ने मेरी सुन ली और मुझे मेरा खोया हुआ बैग आपके द्वारा मिल गया।

मुझे मेरा बैग पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आप नहीं जानते आपने मुझ पर कितना बड़ा एहसान किया है। कुछ ही दिनों में मेरा साक्षात्कार है और इस बैग के बिना में कैसे जाता। यह सोचकर मैं व्यक्त नहीं कर सकता कि मैं कितने मानसिक संताप में था। इस बैग में मेरे प्रमाण–पत्र और मेरे महत्त्वपूर्ण कागज़ात हैं और ईश्वर ने आपको मेरी सहायता हेतु भेज दिया। आपके इस कृत्य ने ये विश्वास जगा दिया कि इस दुनिया में अभी भी इंसानियत और ईमानदारी शेष है।

इस उपकार के लिए हृदय तल से आभार व्यक्त करता हूँ।

आपका ऋणी मित्र,
अनिल कुमार

16. दिए गए चित्र का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। 5

उत्तर : यह चित्र एक दयावान व्यक्ति का है जो किसी जरूरत मंद को दान दे रहा है। दया या करूणा का भाव हम सभी में होना चाहिए। दया धर्म का मूल है। अपने लिए तो सभी जीते हैं पर जो दूसरों का दर्द, दुख, लाचारी और बेबसी को देखकर उनकी सहायता हेतु आगे आता है वही सच्चा मनुष्य होता है। कभी भी किसी को कम नहीं समझना चाहिए और सभी की सहायता के लिए तत्पर रहना चाहिए। सेवा व उदारता से ही मानवता की पहचान होती है। जितना बन पड़े हमें दुखी और लाचारों की मदद करनी चाहिए।

अथवा

उत्तर : यह महाविद्यालय के छात्रों का हॉकी खेलते हुए चित्र है। हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है। टी.वी. पर हॉकी के खेल को देखकर हम रोमांचित हो जाते हैं। जब हमारे भारतीय खिलाड़ी हॉकी में जीत हासिल करते हैं तो खुशी का ठिकाना नहीं रहता। जान पड़ता है मानो वो जीत हमारी सबकी है। खेल हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है। खेलों से हमारा शारीरिक विकास होता है। खेलों के लिए नियमित अभ्यास आवश्यक है। पढ़ाई की तरह ही खेलों के लिए भी हमें समय निर्धारित करना चाहिए।

17. दुकानदार से पुस्तक खरीदते हुए उसके व अपने बीच हुए संवाद को लिखिए। 5

उत्तर :

हर्षित– भैया, पुस्तक चाहिए।

दुकानदार– कौन–सी पुस्तक चाहिए?

हर्षित– जी, मुंशी प्रेमचन्द जी की पुस्तकें दिखाइए।

दुकानदार– जी अभी दिखाता हूँ।

हर्षित– जी

दुकानदार– ये देखिए प्रेमचन्द जी की पुस्तकें–गोदान और मानसरोवर।

हर्षित– वाह! बहुत बढ़िया। मानसरोवर के सभी भाग होंगे आपके पास।

दुकानदार– नहीं 3 हैं अभी, पर शनिवार तक सब आ जाएंगे।

हर्षित– ठीक है तो अभी ये लेकर जाता हूँ। बाद में आकर वो भी लेकर जाऊँगा।

दुकानदार– जी ठीक है।

हर्षित– इनका बिल बना दो।

दुकानदार– जी, सब मिलाकर 1500 रुपए।

हर्षित– लीजिए।

अथवा

रोगी व चिकित्सक के बीच संवाद लिखिए।

उत्तर :

रोगी– शुभ प्रातः सर, क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?

चिकित्सक– जी आइए।

रोगी– धन्यवाद

चिकित्सक– जी कहिए क्या परेशानी है आपको?

रोगी– जी मुझे कल से पेट दर्द हो रहा है। कई घरेलू उपचार भी करके देख लिए पर कोई असर नहीं।

चिकित्सक– क्या कुछ बाहर का खाना खाया?

रोगी– जी, हमारे परिवार में शादी थी वहीं गए हुए थे। वहाँ से आए तभी से दर्द है।

चिकित्सक– ओह! लगता है खाने में कुछ गलत चला गया।

रोगी– हो सकता है।

चिकित्सक– आइए लेट जाइए चैकअप के लिए।

रोगी– जी

चिकित्सक– बाहर का तला हुआ तेज़ मसालों वाला भोजन अक्सर पेट पर बुरा प्रभाव डालता है। आप ये दवाइयाँ 3 दिनों तक समय से ले लीजिए। ठीक हो जाएगा दर्द।

रोगी– धन्यवाद डॉक्टर साहब।

18. किसी बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन कंपनी के लिए आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए– 5

उत्तर :

लक्ष्मी कंस्ट्रक्शन कंपनी

1, 2 एवं 3 बी. एच. के. अब बनेगा आपका अपना घर तो देरी किस बात की

रेडी टू मूव फ्लैट्स जल्द बुक करने पर

15% की छूट

ये ऑफर सीमित समय के लिए

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– 7001812631

अथवा

आपकी बड़ी बहन ने एक संगीत सिखाने की संस्था खोली है। इसके लिए आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए–

उत्तर :

मयूर संगीत संस्था

दुनिया में सबसे बड़ा खजाना संगीत की कला है।

हर प्रकार के वाद्य यंत्र सिखाये जाएंगे।

★ वीणा ★ बांसुरी

★ तुरही ★ सारंगी

★ पियानो आदि

प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक।

कक्षाएँ 15 जून, 2019 से शुरू होंगी।

आवेदन 1 जून से प्रारंभ होंगे।

फीस 250 रुपये प्रति माह

WWW.CBSE.ONLINE

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online